भारतीय शिक्षा बोर्ड
BHARTIYA SHIKSHA BOARD
आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

“आ नो भद्राः
क्रतवो यन्तु विश्वतः
समस्त सद् विचार सभी दिशाओं
से हमारे पास आएँ”

हिंदी

कक्षा-6 ★ कक्षा-7 ★ कक्षा-8

शैक्षणिक दृष्टि एवं लक्ष्य

भारतीय शिक्षा बोर्ड (BSB) ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप एक शिक्षा प्रणाली विकसित की है, जो विद्यार्थियों के समुचित मानसिक विकास और विद्यार्थी-केन्द्रित शैक्षणिक दृष्टिकोणों के संवर्धन हेतु अत्याधुनिक वैज्ञानिक अनुसन्धान आधारित शिक्षा को हमारी स्वदेशी विद्यालयी शिक्षा प्रणाली—गुरु-शिष्य परम्परा के साथ सहजता से एकीकृत करती है। भाषायी शिक्षा के क्षेत्र में इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु भारतीय शिक्षा बोर्ड का पाठ्यक्रम समकालीन वैज्ञानिक एवं तकनीकी आधारित भाषायी शिक्षा के साथ-साथ प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) द्वारा प्राप्त हुए ज्ञान का समन्वय करके निर्मित किया गया है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF 2023) के सिद्धान्तों के अनुरूप निर्मित भारतीय शिक्षा बोर्ड का प्रारम्भिक स्तर से लेकर माध्यमिक स्तर तक का पाठ्यक्रम योग्यता आधारित शिक्षा और छात्रों के बीच 21वीं सदी के कौशल आधारित गुणों के विकास पर बल देता है। इस दृष्टिकोण का उद्देश्य विद्यार्थियों में विवेचनात्मक बुद्धि, रचनात्मक विचार और समस्या-समाधान कौशल का पोषण करना है, जो निरन्तर गतिशील संसार में आजीवन सीखने की प्रक्रिया और सफलता के लिए आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, भारतीय शिक्षा बोर्ड द्वारा शिक्षकों के निरन्तर कौशल विकास हेतु विभिन्न प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है जिससे कि वे पाठ्यक्रम को प्रभावी ढंग से सम्पन्न कर सकें तथा प्रत्येक विद्यार्थी सीखने के सफल और अधिकतम रूप से आत्मसात् कर सकें।

स्वरा

हिंदी की पाठ्यपुस्तक शृंखला, कक्षा-6, 7, 8

ISBN : 978-81-19157-89-1
ISBN : 978-81-19157-43-3
ISBN : 978-81-978610-8-6

ये पाठ्यपुस्तकें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 द्वारा निर्धारित मानकों पर आधारित हैं।

- स्वरा-6, 7 तथा 8 का आवरण पृष्ठ प्रसिद्ध जनजातीय चित्रकला, क्रमशः— भील लोककला, चेरियल लोककला तथा जादोपटिया लोककला पर आधारित है। इन सभी कला के रूपों का विवरण प्रत्येक पाठ्यपुस्तक के पिछले पृष्ठ पर उल्लिखित किया गया है।
- पाठ्यपुस्तक तकनीकी आधारित दृश्य/श्रव्य माध्यमों का अनुसरण करती है।
- पाठ्यपुस्तकों में भारतीय संस्कृति के मूल्यों का यथोचित समावेश है।

स्वरा हिंदी की पाठ्यपुस्तक-6, 7, 8 :

पंचपदी शिक्षण पद्धति— अधीति, बोध, अभ्यास, प्रयोग एवं प्रसार पर आधारित है। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* के अनुसार, यह शिक्षण पद्धति विद्यार्थियों में पाठ्यवस्तु की ग्राह्यता एवं उसके व्यावहारिक प्रयोग की समझ को विकसित करती है, जिससे वे मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति की दक्षता प्राप्त कर सकें।

ये पुस्तकें, *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* के निर्धारित शिक्षण मानकों जैसे- पंचकोश के सिद्धांत— अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश एवं आनंदमय कोश का विकास करती हैं तथा मध्य चरण के लिए सीखने के प्रतिफलों के अनुरूप तैयार की गई हैं। विद्यार्थियों में भाषायी दक्षता एवं उनकी सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना विकसित करने के लिए पाठ्यसामग्री के निर्माण में निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रखा गया है—

- पाठ्यपुस्तक में ज्ञान के क्षमताओं और मूल्यों का विकास, पाठ्यसामग्री के क्रमिक अध्ययन के लाभ, आलोचनात्मक सोच, रचनात्मक क्षमताओं, संवैधानिक और मानवीय मूल्यों के साथ-साथ ज्ञान के विकास पर केंद्रित हैं तथा इसमें खेल, कला एवं संगीत पर आधारित गतिविधियाँ, वाद-विवाद, परिचर्चा, परस्पर संवाद, साक्षात्कार, अभिनय आदि पाठ्य सहगामी गतिविधि का समावेश किया गया है।
  पाठ्यपुस्तक में स्वास्थ्य एवं पर्यावरण जागरूकता, परिवार एवं समाज में सहसंबंध, लोकतांत्रिक मूल्यों का बोध, भाषायी दक्षता, यथा— वाक्य संरचना में विराम चिह्न, काल, लिंग, कारक, संधि, समास, अलंकार आदि से परिचय के साथ-साथ पाठ्यक्रम के सभी चरणों में वाक्य संरचना एवं अभिव्यक्ति कौशल के विकास पर विशेष ध्यान दिया गया है तथा भाषा के सर्जनात्मक कौशल के विकास के लिए समाचार लेखन, रिपोर्ट, साक्षात्कार, पत्र-लेखन, निबंध लेखन आदि भी यथास्थान सन्दर्भित हैं।

- पाठ्यपुस्तक में विभिन्न शैलियों, यथा— कथात्मक, वर्णनात्मक व प्रेरक रूपों को अपनाते हुए, पाठ्यसामग्री का नियमन किया गया है। बच्चों को पुस्तकालयों और पुस्तकों में रुचि जगाने के लिए पुस्तकों की गुणवन्ता एवं बुद्धि के सूक्ष्मता के लिए प्रेरित किया गया है।

***स्वरा* हिंदी की पाठ्यपुस्तक— कक्षा 6, 7 और 8 में भी विद्यार्थियों के सतत् एवं समग्र विकास तथा मूल्यांकन हेतु, *राष्ट्रीय शिक्षा नीति* 2020 के आधार पर प्रत्येक आयामों का अनुसरण किया गया है। सभी पुस्तकों में वय के अनुकूल अभ्यास एवं समसामयिक मूल्यों का भी अनुशीलन किया गया है।**

भाषायी कौशल का विकास

भारतीय शिक्षा बोर्ड की 'स्वरा' हिंदी की पाठ्यपुस्तक–6, 7, 8 विद्यार्थियों के भाषायी कौशल के विकास को केंद्र में रखते हुए निर्मित की गई हैं। पाठ्यपुस्तकों में निम्नलिखित भाषागत कौशल के विकास को समाहित किया गया है—

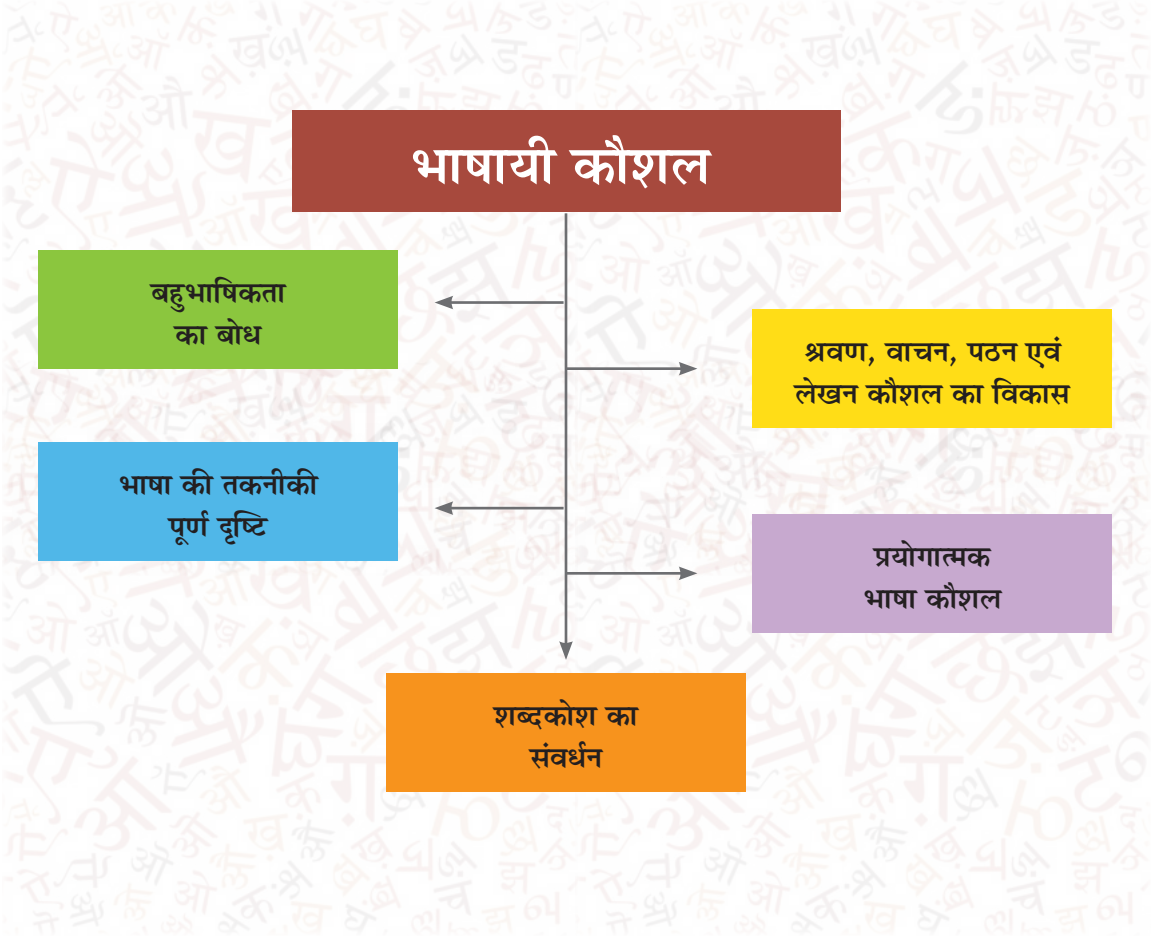

अनुक्रमणिका : कक्षा-6

क्र.सं.	पाठ	विधा
•	सरस्वती वंदना	प्रार्थना
1.	पंच परमेश्वर	कहानी
2.	यक्ष-प्रश्न	नाटक
3.	सिदो और कान्हू	कविता
•	हमारे पूर्वज	जीवनी
4.	पेड़ पर चिड़िया	कहानी
5.	मनुष्यता	कविता
6.	मेरी माँ	आत्मकथांश
•	कथा : भारतीय वाद्य यंत्रों की	निबंध
7.	पुष्प की अभिलाषा	कविता
8.	योग	संवाद
9.	लोक उद्धारक गौतम बुद्ध	जीवनी
•	सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी	संवाद
10.	राम-विभीषण संवाद	कविता
11.	सत्यकाम जाबाल	आख्यान
12.	ठेले पर हिमालय	यात्रा-वृत्तांत
13.	प्रयोजन	कविता
•	अंतिम पत्र	पत्र

अनुक्रमणिका : कक्षा-7

क्र.सं.	पाठ	विधा
1.	अरुण यह मधुमय देश हमारा	कविता
2.	हार की जीत	कहानी
3.	बड़ा कौन ?	आख्यान
•	जनजातीय महानायक : भीमबर देउरी	संवाद
4.	एक तिनका	कविता
5.	हमारे पूर्वज	जीवनी
6.	दो गौरैया	कहानी
•	महावीर स्वामी	जीवनी
7.	कबीर के दोहे	दोहे
8.	साहसी पुत्र	एकांकी
9.	मौन	निबंध
•	माटी की दुनिया	पर्यावरण संरक्षण
10.	हम पंछी उन्मुक्त गगन के	कविता
11.	भीष्म-युधिष्ठिर संवाद	नाटक
12.	कथा : भारतीय नृत्य की	सांस्कृतिक विरासत
•	विवेकानंद जी का संभाषण	भाषण अंश
13.	गिरिधर की कुंडलियाँ	कुंडलियाँ
14.	अहिल्याबाई होल्कर	जीवनी
15.	कबड्डी	खेल
16.	दया नदी	कविता

अनुक्रमणिका : कक्षा-8

क्र.सं.	पाठ	विषय/विधा
1.	भारति, जय, विजय करे!	कविता
2.	काली चिड़िया	कहानी
3.	नीलकंठ	कहानी
4.	सूर के पद	पद
•	हमारे पूर्वज	जीवनी
5.	धुनिया काका का तालाब	कहानी
6.	कथा : भारतीय नाटकों की	सांस्कृतिक विरासत
7.	धृतराष्ट्र-विदुर संवाद	नाटक
8.	एक वृक्ष की हत्या	कविता
•	रक्त और हमारा शरीर	स्वास्थ्य
9.	चींटी	कविता
10.	संत बसवन्ना (बसवण्णा)	जीवनी
11.	वर्षा-महत्त्व	दोहे
12.	पाल-चितरिया कांड	संवाद
•	थाल सजाकर किसे पूजने	कविता
13.	गाड़ी वाले रैक्व ऋषि	आख्यान
14.	जो शिलाएँ तोड़ते हैं	कविता
15.	पोरा तिहार	सांस्कृतिक विरासत
•	माँ की जगह	संस्मरण
•	बहुभाषिक संवाद कौशल	संवाद

पाठ्यपुस्तक की विशेषताएँ

स्वरा हिंदी की पाठ्यपुस्तक— कक्षा 6 में विद्यार्थियों के सतत् एवं समग्र विकास तथा मूल्यांकन हेतु, *राष्ट्रीय शिक्षा नीति* 2020 के आधार पर निम्नलिखित आयाम तैयार किए गए हैं—

पाठ-प्रवेश

विद्यार्थियों में पाठ को पढ़ने, समझने की रुचि जाग्रत होगी।

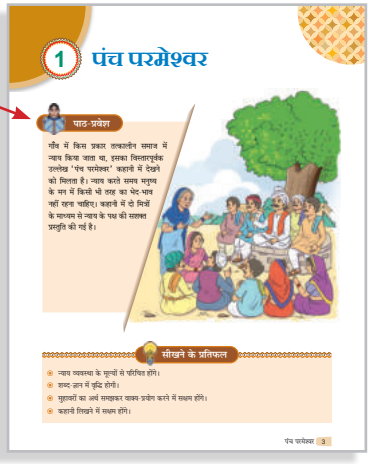

1 पंच परमेश्वर

पाठ-प्रवेश

गाँव में किस प्रकार तत्कालीन समाज में न्याय किया जाता था, इसका विस्तारपूर्वक उल्लेख 'पंच परमेश्वर' कहानी में देखने को मिलता है। न्याय करते समय मनुष्य के मन में किसी भी तरह का भेद-भाव नहीं रहना चाहिए। कहानी में दो मित्रों के माध्यम से न्याय के पक्ष की सशक्त प्रस्तुति की गई है।

सीखने के प्रतिफल

- न्याय व्यवस्था के मूल्यों से परिचित होंगे।
- शब्द-ज्ञान में वृद्धि होगी।
- मुहावरों का अर्थ समझकर वाक्य-प्रयोग करने में सक्षम होंगे।
- कहानी लिखने में सक्षम होंगे।

पंच परमेश्वर 3

7 पुष्प की अभिलाषा

पाठ-प्रवेश

कविता में पुष्प के माध्यम से राष्ट्र-प्रेम की भावना जाग्रत की गई है। पुष्प की अभिलाषा है कि उसे देश के लिए बलिदान देने वाले वीर सैनिकों के मार्ग में बिछाया जाए। वह इसके अतिरिक्त न देव कन्या के गहनों में गूँथा जाना चाहता है, न सम्राटों के शव पर अर्पित होना चाहता है। वह अंततः बलिदानियों के मार्ग में बिछकर धन्य होना चाहता है।

सीखने के प्रतिफल

- राष्ट्र-प्रेम की भावना जाग्रत होगी।
- बोधगम्य भाषा में सशक्त अभिव्यक्ति कौशल से परिचित होंगे।
- पर्यायवाची शब्दों तथा अनेकार्थी शब्दों को सीखकर, भाषा-संपदा को समृद्ध कर पाएँगे।
- तुकबंदी वाले शब्दों की सहायता से कविता लिखना सीखेंगे।

66 स्वरा : हिंदी पाठ्यपुस्तक—कक्षा 6

सीखने के प्रतिफल

विद्यार्थी पाठों एवं गतिविधियों के लक्ष्य/उद्देश्य को समझने/जानने में सक्षम हो पाएँगे।

शब्दार्थ

विद्यार्थी पाठ में आए कठिन शब्दों के सरल अर्थ से परिचित होंगे। शब्दार्थ के माध्यम से शब्द-संपदा का विकास होगा।

चाह नहीं मैं सुरबाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं, प्रेमी-माला में
बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर
हे हरि, डाला जाऊँ,
चाह नहीं, देवों के सिर पर
चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना वनमाली!
उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावें वीर अनेक।

—माखनलाल चतुर्वेदी

कवि परिचय

माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म 4 अप्रैल, 1889 को मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जनपद के बाबई नामक गाँव में हुआ था। इन्हें 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। भारत सरकार ने इन्हें 'पद्मभूषण' से भी अलंकृत किया। इनकी मृत्यु 30 जनवरी, 1968 को हुई।

शब्दार्थ— अभिलाषा : इच्छा; सुरबाला : अप्सरा, देवलोक की कन्या; बिंधना : बिंध जाना, पिरोया जाना; इठलाना : घमंड करना; वनमाली : पेड़-पौधों की देखभाल करने वाला

मूल्यबोध

इसके अंतर्गत पाठ के आधार पर विद्यार्थियों में विकसित होने वाले मूल्यों के प्रति ध्यानाकर्षण होगा।

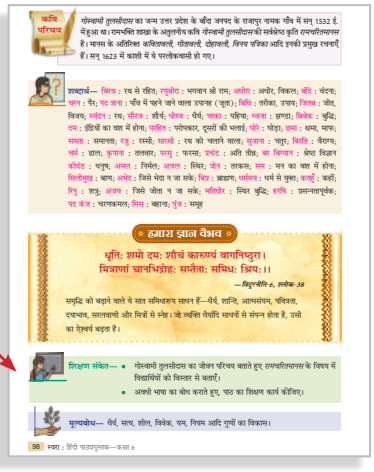

शिक्षण संकेत

शिक्षक/शिक्षिकाओं को पाठ के अध्यापन कार्य हेतु शिक्षार्थियों की कक्षा के अनुकूल संकेत दिए गए हैं।

हमारा ज्ञान वैभव

इसके अंतर्गत प्राचीन भारतीय साहित्य के विषय में विद्यार्थियों को जानकारी प्राप्त होती है। साथ ही भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्यों के बारे में ज्ञानवर्धन होता है।

अभिव्यक्ति कौशल

विद्यार्थी पाठ को पढ़कर अपने भावों तथा विचारों को मौखिक एवं लिखित ढंग से व्यक्त करने की क्षमता का विकास कर सकेंगे।

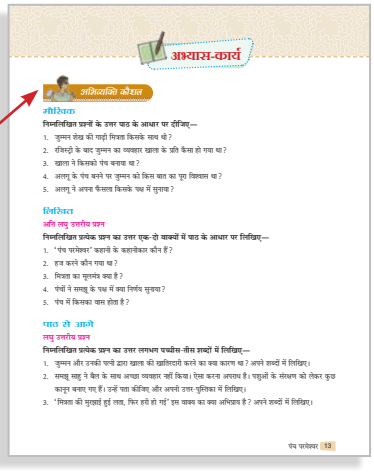

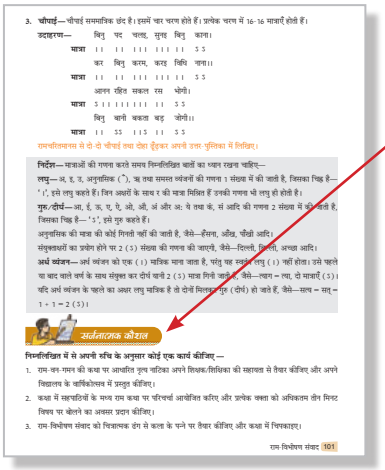

3. **चौपाई—** चौपाई सममात्रिक छंद है। इसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण— बिनु पद चलइ, सुनइ बिनु काना।
मात्रा ।। ।। ।।। ।।। ।। ऽऽ
कर बिनु करम, करइ विधि नाना।।
मात्रा ।। ।। ।।। ।।। ।। ऽऽ
आनन रहित सकल रस भोगी।
मात्रा ऽ।। ।।।।।। ।। ऽऽ
बिनु बानी बकता बड़ जोगी।।
मात्रा ।। ऽऽ ।।ऽ ।। ऽऽ

रामचरितमानस से दो-दो चौपाई तथा दोहा ढूँढ़कर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए।

निर्देश— मात्राओं की गणना करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—
लघु— अ, इ, उ, अनुनासिक (ँ), ऋ तथा समस्त व्यंजनों की गणना 1 संख्या में की जाती है, जिसका चिह्न है— '।', इसे लघु कहते हैं। जिन अक्षरों के साथ र की मात्रा मिश्रित हैं उनकी गणना भी लघु ही होती है।
गुरु/दीर्घ— आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं और अः ये तथा कं, सं आदि की गणना 2 संख्या में की जाती है, जिसका चिह्न है— 'ऽ', इसे गुरु कहते हैं।
अनुनासिक की मात्रा की कोई गिनती नहीं की जाती है, जैसे—हँसना, आँख, पाँखी आदि।
संयुक्ताक्षरों का प्रयोग होने पर 2 (ऽ) संख्या की गणना की जाएगी, जैसे—दिल्ली, बिल्ली, अच्छा आदि।
अर्ध व्यंजन— अर्ध व्यंजन को एक (।) मात्रिक माना जाता है, परंतु यह स्वतंत्र लघु (।) नहीं होता। उसे पहले या बाद वाले वर्ण के साथ संयुक्त कर दीर्घ यानी 2 (ऽ) मात्रा गिनी जाती है, जैसे—त्याग = त्या, दो मात्राएँ (ऽ)। यदि अर्ध व्यंजन के पहले का अक्षर लघु मात्रिक है तो दोनों मिलकर गुरु (दीर्घ) हो जाते हैं, जैसे—सत्य = सत् = 1 + 1 = 2 (ऽ)।

सर्जनात्मक कौशल

निम्नलिखित में से अपनी रुचि के अनुसार कोई एक कार्य कीजिए—
1. राम-वन-गमन की कथा पर आधारित नृत्य नाटिका अपने शिक्षक/शिक्षिका की सहायता से तैयार कीजिए और अपने विद्यालय के वार्षिकोत्सव में प्रस्तुत कीजिए।
2. कक्षा में सहपाठियों के मध्य राम कथा पर परिचर्चा आयोजित करिए और प्रत्येक वक्ता को अधिकतम तीन मिनट विषय पर बोलने का अवसर प्रदान कीजिए।
3. राम-विभीषण संवाद को चित्रात्मक ढंग से कला के पन्ने पर तैयार कीजिए और कक्षा में चिपकाइए।

राम-विभीषण संवाद 101

सर्जनात्मक कौशल

विद्यार्थी खेल, संगीत एवं कला आदि माध्यमों से पढ़े हुए पाठों का रचनात्मक क्षमता का विकास करेंगे।

व्यावसायिक कौशल

राम-विभीषण की मित्रता को दर्शाता हुआ एक पोस्टर तैयार करें।

स्वाध्याय

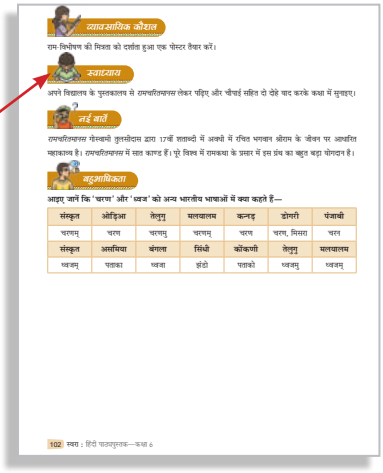

अपने विद्यालय के पुस्तकालय से *रामचरितमानस* लेकर पढ़िए और चौपाई सहित दो दोहे याद करके कक्षा में सुनाइए।

नई बातें

रामचरितमानस गोस्वामी तुलसीदास द्वारा 17वीं शताब्दी में अवधी में रचित भगवान श्रीराम के जीवन पर आधारित महाकाव्य है। *रामचरितमानस* में सात काण्ड हैं। पूरे विश्व में रामकथा के प्रसार में इस ग्रंथ का बहुत बड़ा योगदान है।

बहुभाषिकता

आइए जानें कि 'चरण' और 'ध्वज' को अन्य भारतीय भाषाओं में क्या कहते हैं—

संस्कृत	ओड़िआ	तेलुगु	मलयालम	कन्नड़	डोगरी	पंजाबी
चरणम्	चरण	चरणमु	चरणम्	चरण	चरण, मिसरा	चरन
संस्कृत	**असमिया**	**बंगला**	**सिंधी**	**कोंकणी**	**तेलुगु**	**मलयालम**
ध्वजम्	पताका	ध्वजा	झंडो	पताको	ध्वजमु	ध्वजम्

102 स्वरा : हिंदी पाठ्यपुस्तक—कक्षा 6

स्वाध्याय

विद्यार्थी पुस्तकालय का प्रयोग करना एवं स्वाध्याय की क्षमता का विकास करेंगे।

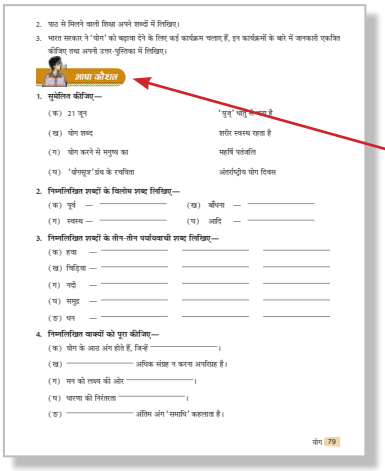

2. पाठ से मिलने वाली शिक्षा अपने शब्दों में लिखिए।
3. भारत सरकार ने 'योग' को बढ़ावा देने के लिए कई कार्यक्रम चलाए हैं, इन कार्यक्रमों के बारे में जानकारी एकत्रित कीजिए तथा अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए।

भाषा कौशल

1. **सुमेलित कीजिए—**
   (क) 21 जून — 'युज्' धातु से बना है
   (ख) योग शब्द — शरीर स्वस्थ रहता है
   (ग) योग करने से मनुष्य का — महर्षि पतंजलि
   (घ) '*योगसूत्र*' ग्रंथ के रचयिता — अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस
2. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—**
   (क) पूर्व — ____ (ख) बाँधना — ____
   (ग) स्वस्थ — ____ (घ) आदि — ____
3. **निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए—**
   (क) हवा — ____ ____ ____
   (ख) चिड़िया — ____ ____ ____
   (ग) नदी — ____ ____ ____
   (घ) समुद्र — ____ ____ ____
   (ङ) धन — ____ ____ ____
4. **निम्नलिखित वाक्यों को पूरा कीजिए—**
   (क) योग के आठ अंग होते हैं, जिन्हें ____।
   (ख) ____ अधिक संग्रह न करना अपरिग्रह है।
   (ग) मन को लक्ष्य की ओर ____।
   (घ) धारणा की निरंतरता ____।
   (ङ) ____ अंतिम अंग 'समाधि' कहलाता है।

योग 79

भाषा कौशल

विद्यार्थी भाषा को अनुशासित ढंग से व्याकरण के मानकों के अनुरूप अभिव्यक्त करने में सक्षम होंगे।

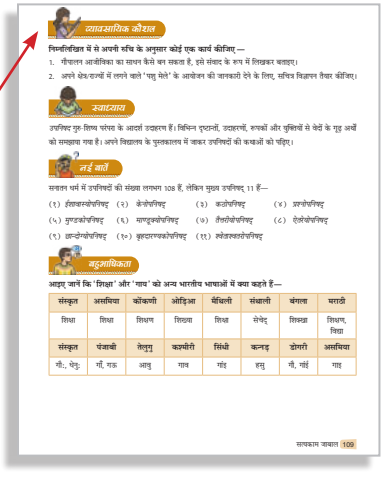

व्यावसायिक कौशल

निम्नलिखित में से अपनी रुचि के अनुसार कोई एक कार्य कीजिए—
1. गौपालन आजीविका का साधन कैसे बन सकता है, इसे संवाद के रूप में लिखकर बताइए।
2. अपने क्षेत्र/राज्यों में लगने वाले 'पशु मेले' के आयोजन की जानकारी देने के लिए, सचित्र विज्ञापन तैयार कीजिए।

स्वाध्याय

उपनिषद गुरु-शिष्य परंपरा के आदर्श उदाहरण हैं। विभिन्न दृष्टान्तों, उदाहरणों, रूपकों और युक्तियों से वेदों के गूढ़ अर्थों को समझाया गया है। अपने विद्यालय के पुस्तकालय में जाकर उपनिषदों की कथाओं को पढ़िए।

नई बातें

सनातन धर्म में उपनिषदों की संख्या लगभग 108 हैं, लेकिन मुख्य उपनिषद् 11 हैं—
(१) *ईशावास्योपनिषद्* (२) *केनोपनिषद्* (३) *कठोपनिषद्* (४) *प्रश्नोपनिषद्*
(५) *मुण्डकोपनिषद्* (६) *माण्डूक्योपनिषद्* (७) *तैत्तरीयोपनिषद्* (८) *ऐतरेयोपनिषद्*
(९) *छान्दोग्योपनिषद्* (१०) *बृहदारण्यकोपनिषद्* (११) *श्वेताश्वतरोपनिषद्*

बहुभाषिकता

आइए जानें कि 'शिक्षा' और 'गाय' को अन्य भारतीय भाषाओं में क्या कहते हैं—

संस्कृत	असमिया	कोंकणी	ओड़िआ	मैथिली	संथाली	बंगला	मराठी
शिक्षा	शिक्षा	शिक्षण	शिख्या	शिक्षा	सेचेद्	शिक्खा	शिक्षण, विद्या
संस्कृत	**पंजाबी**	**तेलुगु**	**कश्मीरी**	**सिंधी**	**कन्नड़**	**डोगरी**	**असमिया**
गौः, धेनुः	गाँ, गऊ	आवु	गाव	गांइ	हसु	गौ, गांई	गाइ

सत्यकाम जाबाल 109

व्यावसायिक कौशल

विद्यार्थी हिंदी भाषा के व्यावसायिक महत्त्व एवं उसके कौशल को जानने में समर्थ होंगे।

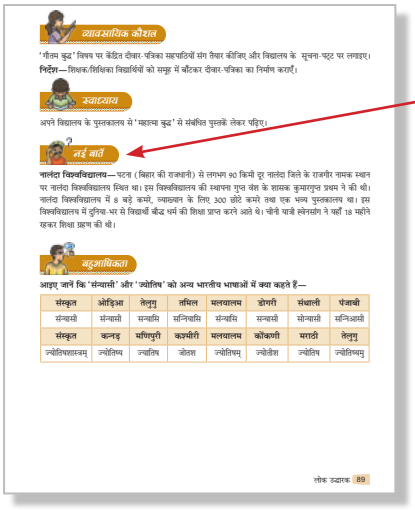

व्यावसायिक कौशल

'गौतम बुद्ध' विषय पर केंद्रित दीवार-पत्रिका सहपाठियों संग तैयार कीजिए और विद्यालय के सूचना-पट्ट पर लगाइए।

निर्देश— शिक्षक/शिक्षिका विद्यार्थियों को समूह में बाँटकर दीवार-पत्रिका का निर्माण कराएँ।

स्वाध्याय

अपने विद्यालय के पुस्तकालय से 'महात्मा बुद्ध' से संबंधित पुस्तकें लेकर पढ़िए।

नई बातें

नालंदा विश्वविद्यालय— पटना (बिहार की राजधानी) से लगभग 90 किमी दूर नालंदा जिले के राजगीर नामक स्थान पर नालंदा विश्वविद्यालय स्थित था। इस विश्वविद्यालय की स्थापना गुप्त वंश के शासक कुमारगुप्त प्रथम ने की थी। नालंदा विश्वविद्यालय में 8 बड़े कमरे, व्याख्यान के लिए 300 छोटे कमरे तथा एक भव्य पुस्तकालय था। इस विश्वविद्यालय में दुनिया-भर से विद्यार्थी बौद्ध धर्म की शिक्षा प्राप्त करने आते थे। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने यहाँ 18 महीने रहकर शिक्षा ग्रहण की थी।

बहुभाषिकता

आइए जानें कि 'संन्यासी' और 'ज्योतिष' को अन्य भारतीय भाषाओं में क्या कहते हैं—

संस्कृत	ओड़िआ	तेलुगु	तमिल	मलयालम	डोगरी	संथाली	पंजाबी
संन्यासी	संन्यासी	सन्यासि	सन्नियासि	संन्यासि	सन्यासी	सोन्यासी	सन्निआसी
संस्कृत	**कन्नड़**	**मणिपुरी**	**कश्मीरी**	**मलयालम**	**कोंकणी**	**मराठी**	**तेलुगु**
ज्योतिषशास्त्रम्	ज्योतिष्य	ज्यातिष	जोतश	ज्योतिषम्	ज्योतीश	ज्योतिष	ज्योतिष्यमु

लोक उद्धारक 89

नई बातें

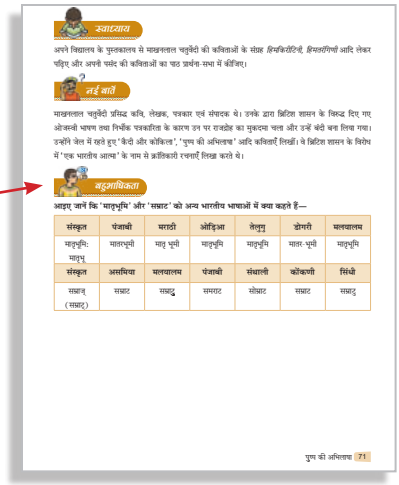

विद्यार्थी रोचक एवं नई जानकारी प्राप्त कर भारतीय ज्ञान-संपदा का विस्तृत ज्ञान प्राप्त करेंगें।

बहुभाषिकता

विद्यार्थी में विभिन्न भारतीय भाषाओं के शब्दों को सीखने से हिंदी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं के प्रति उत्सुकता एवं रुचि जागृत होगी।

स्वाध्याय

अपने विद्यालय के पुस्तकालय से माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं के संग्रह *हिमकिरीटिनी, हिमतरंगिणी* आदि लेकर पढ़िए और अपनी पसंद की कविताओं का पाठ प्रार्थना-सभा में कीजिए।

नई बातें

माखनलाल चतुर्वेदी प्रसिद्ध कवि, लेखक, पत्रकार एवं संपादक थे। उनके द्वारा ब्रिटिश शासन के विरुद्ध दिए गए ओजस्वी भाषण तथा निर्भीक पत्रकारिता के कारण उन पर राजद्रोह का मुकदमा चला और उन्हें बंदी बना लिया गया। उन्होंने जेल में रहते हुए 'कैदी और कोकिला', 'पुष्प की अभिलाषा' आदि कविताएँ लिखीं। वे ब्रिटिश शासन के विरोध में 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से क्रांतिकारी रचनाएँ लिखा करते थे।

बहुभाषिकता

आइए जानें कि 'मातृभूमि' और 'सम्राट' को अन्य भारतीय भाषाओं में क्या कहते हैं—

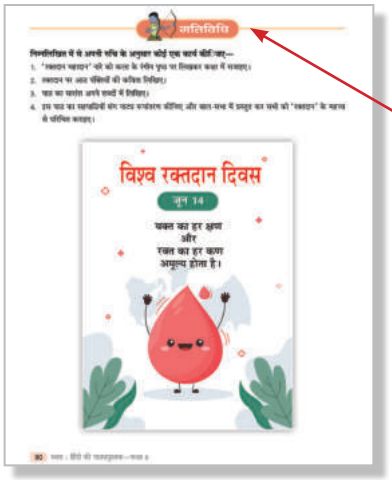

संस्कृत	पंजाबी	मराठी	ओड़िआ	तेलुगु	डोगरी	मलयालम
मातृभूमि: मातृभू	मातरभूमी	मातृ भूमी	मातृभूमि	मातृभूमि	मातर-भूमी	मातृभूमि
संस्कृत	**असमिया**	**मलयालम**	**पंजाबी**	**संथाली**	**कोंकणी**	**सिंधी**
सम्राज् (सम्राट्)	सम्राट	सम्राट्टु	समराट	सोम्राट	सम्राट	सम्राटु

पुष्प की अभिलाषा 71

गतिविधि

80

गतिविधि

पाठों के साथ दी गई गतिविधियाँ, विद्यार्थियों के व्यावहारिक जीवन में रचनात्मक कौशल के विकास में सहायक होंगी।

बोर्ड की हिंदी की पाठ्यपुस्तकें विद्यार्थियों के भाषायी कौशल के विकास के लिए भूमि तैयार करने में पूर्णत: सक्षम हैं। विद्यार्थी पुस्तकों के माध्यम से ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्षों का विकास कर अभिव्यक्ति की क्षमता में दक्षता प्राप्त करेंगे।

भारतीय शिक्षा बोर्ड की पाठ्यपुस्तकों के विषय में प्राय: पूछे जाने वाले प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1: कोई भी विद्यालय भारतीय शिक्षा बोर्ड (बीएसबी) से कैसे संबद्ध हो सकता है ?

उत्तर: संबद्धता उपनियम सहित विस्तृत निर्देश हमारी वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी के लिए, कृपया BSB ग्राहक सहायता नंबर: 8954999000 पर फ़ोन या WhatsApp करें। ईमेल: affiliation@bsb.org.in। BSB कार्यालय समय: प्रतिदिन सुबह 6:00 बजे से रात 10:00 बजे तक।

प्रश्न 2: भारतीय शिक्षा बोर्ड (बीएसबी) द्वारा विकसित पाठ्य पुस्तकों की विशेषताएँ क्या हैं और बोर्ड की पाठ्यपुस्तकें दूसरों से किस तरह अलग हैं ?

उत्तर: भारतीय शिक्षा बोर्ड की पाठ्यपुस्तकों को आधुनिक शिक्षा प्रणाली के आधार पर परीक्षणपूर्वक विकसित किया गया है। पुस्तकों में प्राचीन भारतीय पारंपरिक ज्ञान, शास्त्रों, पारंपरिक प्रथाओं और लोकाचार में उपयुक्त संदर्भ सहित समाहित किया गया है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को 'भारतीय ज्ञान की ओर' अभिमुख होकर वैश्विक नागरिक के रूप में विकसित होने में सक्षम बनाना है। पाठ्यपुस्तकों में सामग्री पाठ्यक्रम और राष्ट्रीय शैक्षिक मानकों के अनुरूप है। पाठ्यपुस्तकें प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणालियों और 21वीं सदी के कौशल को संतुलित संश्लेषण के माध्यम से योग्यता-आधारित शिक्षा पर बल देती हैं।

प्रश्न 3: मैं पाठ्यपुस्तकों की एक प्रति या पूरा सेट कहाँ से प्राप्त कर सकती हूँ ?

उत्तर: इच्छुक लोग भारतीय शिक्षा बोर्ड की वेबसाइट https://bsb.org.in पर जाकर "पुस्तकों की उपलब्धता" अनुभाग पर क्लिक करके पुस्तकें चुन सकते हैं और ऑर्डर दे सकते हैं। पुस्तकों के स्थानीय विक्रेता भी हैं। इन विक्रेताओं की सूची जानने या किसी अन्य सहायता के लिए, आप निम्नलिखित नंबरों पर संपर्क कर सकते हैं: फ़ोन/WhatsApp: +91 89549 99000।

प्रश्न 4: पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के बारे में कुछ विवरण दीजिए।

उत्तर: पाठ्यपुस्तकें अनुभवी विषय-विशेषज्ञों द्वारा शिक्षा-क्षेत्र के अग्रणी विद्वानों के मार्गदर्शन में विकसित की गई हैं, जैसे:

- डॉ एच.सी. वर्मा (पूर्व प्रोफेसर, आईआईटी कानपुर और 'कॉन्सेप्ट्स ऑफ फिजिक्स' जैसी कई पुस्तकों के प्रसिद्ध लेखक) के मार्गदर्शन में विज्ञान की पाठ्यपुस्तकें।
- डॉ हुकुम सिंह (पूर्व प्रोफेसर और डीन, अकादमिक और प्रमुख डीईएसएम, डीईके, एनसीईआरटी) के मार्गदर्शन में गणित की पाठ्यपुस्तकें।
- डॉ प्रमोद दुबे (पूर्व प्रोफेसर एनसीईआरटी) और डॉ रामदरश मिश्र (पूर्व प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय और प्रसिद्ध लेखक) के मार्गदर्शन में हिंदी की पाठ्यपुस्तकें।
- जेएनयू के प्रोफेसर माधव गोविंद, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एस.सी. राय एवं प्रोफेसर श्री प्रकाश सिंह के मार्गदर्शन में सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकें।
- प्रो० राधावल्लभ त्रिपाठी (पूर्व-कुलपति), प्रो० श्री निवास वरखेड़ी (कुलपति), डॉ विजय पाल शास्त्री (पूर्व प्रोफेसर) - केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के मार्गदर्शन में संस्कृत की पाठ्यपुस्तकें।
- सुश्री जयश्री कन्नन (स्वतंत्र अंग्रेजी भाषा शिक्षण—ईएलटी सलाहकार) के मार्गदर्शन में अंग्रेजी पाठ्यपुस्तकें।

प्रश्न 5: क्या कोई शिक्षक या विशेषज्ञ भारतीय शिक्षा बोर्ड की पाठ्यपुस्तकों के लिए अपने विचार और सुझाव दे सकता है या कोई सुधार सुझा सकता है ?

उत्तर: भारतीय शिक्षा बोर्ड विशेषज्ञों के विचार एवं परामर्श का स्वागत करता है, जिससे 'पाठ्य पुस्तक निर्माण समिति' द्वारा विचार-विमर्श के बाद, भविष्य के संस्करणों में शामिल करने की योजना पर विचार किया जाएगा।

प्रश्न 6: क्या सीबीएसई, आईसीएसई और राज्य बोर्ड जैसे अन्य बोर्डों के स्कूल भारतीय शिक्षा बोर्ड की पाठ्यपुस्तकों का उपयोग कर सकते हैं ?

उत्तर: भारतीय शिक्षा बोर्ड द्वारा विकसित पाठ्य पुस्तकें एनईपी-2020, एनसीएफ-एफएस 2022 और एनसीएफ-2023 के अनुरूप है, और राष्ट्रीय शैक्षिक मानकों का पालन करती है, इसलिए, अन्य बोर्डों/संस्थानों के लिए भी उपयुक्त/उपयोगी हो सकती है।

प्रश्न 7: बीएसबी द्वारा किस पाठ्यक्रम का अनुसरण किया जाता है और यह एनसीईआरटी पैटर्न से किस प्रकार भिन्न है ?

उत्तर: बीएसबी पाठ्यपुस्तकें पारंपरिक 'भारतीय ज्ञान परम्परा' को आधुनिक शिक्षण दृष्टिकोणों के साथ एकीकृत करने पर अपने मुख्य केंद्र

के कारण विशिष्ट हैं और एनईपी-2020 और एनसीएफ-2023 के साथ सभी पुस्तकें योग्यता आधारित शिक्षा (सीबीएल) पर जोर देते हुए एक संतुलित दृष्टिकोण को संश्लेषित करती हैं।

प्रश्न 8: क्या बीएसबी पाठ्यपुस्तकें छात्रों को विभिन्न दक्षता परीक्षाओं के लिए तैयार करने के लिए उन्मुख हैं ?

उत्तर: बीएसबी पुस्तकों का अध्ययन करने वाले छात्र प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए अच्छी तरह से सुसज्जित होंगे क्योंकि बीएसबी पाठ्यक्रम पूरी तरह से एनईपी 2020 और एनसीएफ 2023 पर आधारित है। राष्ट्रीय ढांचे जेईई और एनईईटी आदि जैसी परीक्षाओं में अच्छा प्रदर्शन करने के लिए आवश्यक वैचारिक समझ और योग्यता-आधारित शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करती है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि छात्रों को उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए आवश्यक आधार प्राप्त हो।

प्रश्न 9: उपनियमों के अनुसार सभी श्रेणियों की संबद्धता के लिए ऑफलाइन/ऑनलाइन आवेदन आम तौर पर कब प्रस्तुत करने की अनुमति दी जाती है ?

उत्तर: इन उपनियमों के दायरे में आने वाली सभी श्रेणियों के लिए ऑनलाइन/ऑफ़लाइन आवेदन सामान्यत: 1 जनवरी को शुरू होंगे और किसी विशेष कैलेंडर वर्ष की 31 दिसंबर तक बंद हो जाएँगे। अधिक जानकारी के लिए, संबद्धता उपनियमों के अध्याय संख्या 10, खंड संख्या 10.4.3 पढ़ें।

प्रश्न 10: संबद्धता और संगठन का क्या अर्थ है ?

उत्तर: **संबद्धता का अर्थ है** - वे विद्यालय जो कक्षा 8 तक राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हैं और कक्षा 10 या 12 तक भारतीय शिक्षा बोर्ड से संबद्ध होना चाहते हैं, या वे विद्यालय जो कक्षा 10 या 12 तक पहले से ही किसी अन्य शिक्षा बोर्ड से संबद्ध हैं और भारतीय शिक्षा बोर्ड में शामिल होना चाहते हैं।

संगठन का अर्थ है - वे विद्यालय जो कक्षा 8 तक राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हैं तथा भारतीय शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित समस्त पाठ्यपुस्तकों का शत-प्रतिशत क्रियान्वयन सुनिश्चित करने, बोर्ड द्वारा आयोजित शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भागीदारी करने तथा परीक्षाओं के दौरान बोर्ड की मूल्यांकन प्रक्रिया का अनुपालन करने के लिए पूर्णत: प्रतिबद्ध हैं - ऐसे विद्यालय कक्षा 8 तक भारतीय शिक्षा बोर्ड से संबद्ध हैं।

प्रश्न 11: क्या स्कूल संबद्धता के लिए आवेदन कर सकता है भले ही भूमि दो अलग-अलग परिसरों में हो ?

उत्तर: यदि स्कूल पहले से ही एक परिसर में कक्षा 8वीं तक चल रहा है और दूसरे परिसर में 9वीं से 12वीं तक की संबद्धता लेना चाहता है, तो ऐसी स्थिति में भी स्कूल संबद्धता के लिए आवेदन कर सकता है, लेकिन भूमि उसी स्थानीय सरकारी प्राधिकरण के अधीन और उसी राजस्व क्षेत्र में होनी चाहिए। हालाँकि, यह निर्णय बोर्ड द्वारा मामले-दर-मामला आधार पर लिया जाएगा।

प्रश्न 12: क्या स्कूल किसी सोसायटी या किसी अन्य स्कूल के साझा खेल के मैदान का उपयोग कर सकता है ?

उत्तर: हाँ, स्कूल किसी अन्य मैदान का उपयोग कर सकता है, लेकिन इसके लिए स्थानीय प्राधिकरण से उचित अनुमति लेनी होगी। यदि एक से अधिक स्कूल एक ही खेल मैदान का उपयोग कर रहे हैं, तो खेल का समय एक जैसा नहीं होना चाहिए। दूसरी बात, यह मैदान पास में होना चाहिए ताकि छात्र इसका उपयोग कर सकें।

प्रश्न 13: क्या जनजातीय क्षेत्र और पहाड़ी क्षेत्र के स्कूलों के लिए संबद्धता लेने हेतु कोई विशेष प्रावधान हैं ?

उत्तर: हां, क्षेत्रीय विशेषताओं के आधार पर अधिसूचित पहाड़ी और जनजातीय क्षेत्रों के लिए कुछ विशेष प्रावधान हैं, ताकि स्थान की भू-आर्थिक परंपराओं और पर्यावरण-अनुकूल संस्कृति को बढ़ावा दिया जा सके और अधिसूचित जनजातीय क्षेत्र में बीएसबी ने स्कूल संबद्धता शुल्क के लिए 50% शुल्क रियायत भी प्रदान की है।

प्रश्न 14: क्या बीएसबी शिक्षक प्रशिक्षण आयोजित करता है ?

उत्तर: हाँ, प्रत्येक संबद्ध/सहयोगी विद्यालय वार्षिक प्रशिक्षण और त्रैवार्षिक प्रशिक्षण आयोजित करेगा। अधिक जानकारी के लिए संबद्धता उपनियमों के अध्याय संख्या 16, खंड संख्या 16.1 और 16.2 पढ़ें।

प्रश्न 15: वे कौन सी शर्तें हैं जिनके तहत किसी स्कूल की भारतीय शिक्षा बोर्ड से संबद्धता रद्द की जा सकती है (संबद्धता रद्द करना) ?

उत्तर: यदि कोई विद्यालय बोर्ड के संबद्धता उपनियमों/परीक्षा उपनियमों के प्रावधानों का उल्लंघन करता पाया जाता है या बोर्ड के निर्देशों का पालन नहीं करता है, तो बोर्ड उस विद्यालय की संबद्धता रद्द कर देगा। अधिक जानकारी के लिए, संबद्धता उपनियमों के अध्याय संख्या 13, खंड संख्या 13.2 पढ़ें।

स्वामी रामदेव और आचार्य बालकृष्ण एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की परिकल्पना करते हैं, जो बौद्धिक रूप से कुशल, नैतिक एवं आध्यात्मिक रूप से सुदृढ़ तथा सर्वांगीण व्यक्तित्व का निर्माण करे। शिक्षा सम्बन्धी उनका दृष्टिकोण पारम्परिक भारतीय ज्ञान को समकालीन शैक्षणिक सिद्धान्तों के साथ सहजता से जोड़ता है, जो आत्म-साक्षात्कार और समग्र विकास पर केन्द्रित है। वे विद्यार्थियों में अनुशासन, सम्मान और नैतिक अखण्डता जैसे मूल्यों को स्थापित करने के महत्त्व पर जोर देते हैं। उनके अनुसार, शिक्षा को चरित्र निर्माण में सहायता करनी चाहिए तथा समाज एवं राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व की भावना को बढ़ावा देना चाहिए। वास्तविक शिक्षा पाठ्यपुस्तकों और परीक्षाओं से परे मन, शरीर और आत्मा का पोषण करती है एवं विद्यार्थियों को 21वीं सदी के आवश्यक कौशल से युक्त करती है ताकि वे आधुनिक संसार में समाज एवं राष्ट्र को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने योग्य बनें।

भारतीय शिक्षा बोर्ड का लक्ष्य एक समावेशी एवं प्रगतिशील शैक्षणिक वातावरण का निर्माण करना है, जिससे विद्यार्थी भविष्य के जिम्मेदार नागरिक और सक्षम नेतृत्व के गुणों से परिपूर्ण हो सकें। समकालीन शैक्षिक परिदृश्य में, प्राचीन भारतीय ज्ञान और सांस्कृतिक विरासत के साथ-साथ आधुनिक दक्षताओं को एकीकृत करने की आवश्यकता बढ़ी है, जिसके माध्यम से ऐसे सन्तुलित एवं समीचीन व्यक्तित्वों का निर्माण करना है, जो न केवल समकालीन कौशल में निपुण एवं आर्थिक विकास को प्राथमिकता देने की क्षमता रखते हों, बल्कि अपनी सांस्कृतिक पहचान और नैतिक मूल्यों से भी सुदृढ़ता से जुड़े रहें। शिक्षा को पर्यावरणीय जागरूकता के साथ वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति को बढ़ावा देना चाहिए। शिक्षा सामाजिक न्याय और समानता को विकसित करने के महत्वपूर्ण उत्प्रेरक के रूप में कार्य करती है तथा एक ऐसे समाज को गढ़ती है, जहाँ हर पृष्ठभूमि के व्यक्ति को समुचित विकास का अवसर मिलता है। इसके अलावा, यह विद्यार्थियों की समाज में भागीदारी और योगदान को प्रोत्साहित करती है, जो समाज में आर्थिक, सांस्कृतिक और लोकतान्त्रिक वातावरण के संवर्धन हेतु महत्त्वपूर्ण है। इन सभी तत्वों का समन्वय एक समृद्ध, प्रगतिशील और समरस वैश्विक समुदाय के विकास का मार्ग प्रशस्त करता है।

डॉ एन.पी. सिंह

आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त)

कार्यकारी अध्यक्ष

भारतीय शिक्षा बोर्ड

विद्या ही सच्चा अविनाशी धन है।

—तिरुवल्लुवर

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मनुष्यों में ऐसी जागरुकता उत्पन्न करना है जिससे वे सत्य एवं असत्य का अंतर समझ सकें।

—महर्षि दयानंद सरस्वती

शिक्षा मनुष्यों की पूर्णता, जो उसमें पहले से विद्यमान हैं, की अभिव्यक्ति है।

—स्वामी विवेकानंद

जागो, उठो और शिक्षित करो।

—सावित्रीबाई फुले

शिक्षा का उद्देश्य कौशल और विशेषज्ञता से युक्त अच्छे मनुष्यों का निर्माण करना है।

—ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

भारतीय शिक्षा बोर्ड

पतंजलि योगपीठ, फेज-1, दिल्ली–हरिद्वार राजमार्ग,
बहादराबाद, हरिद्वार–249405 (उत्तराखण्ड)
+91 7982817158, 9936442616
ई-मेल : info@bsb.org.in
वेबसाइट : bsb.org.in